सुनी कहानी

लोककथा – 1 (लालची किसान)

एक किसान अपनी पत्नी के साथ एक गाँव में रहता था। उनके पास एक थोड़ी सी ज़मीन थी जहाँ वे सब्ज़ियों की खेती करते थे और उन सब्ज़ियों को बाज़ार में बेच देते थे। गाँव में एक सरोवर के पास एक मंदिर बना हुआ था। गाँव के लोग सरोवर की देवी को मछली और सरोवर किनारे लगे पेड़ के आम चढ़ाते थे इसलिए सभी को अपने स्वार्थ के लिए पेड़ और झील का उपयोग करने की मनाही थी।

एक दिन किसान मंदिर को पार कर रहा था और उसने देखा कि पेड़ से बहुत सारे रसीले आम लटके हुए हैं। उसने चारों ओर देखा और पाया कि आस पास कोई नहीं था। यह अच्छा अवसर पाकर, उसने जल्दी से पेड़ से बहुत सारे आम तोड़े और उसे धोने के लिए सरोवर के किनारे चला गया। जैसे ही वह सरोवर में गया, उसने देखा कि कई मछलियाँ तैर रही हैं। उसने तुरंत सरोवर से आधा दर्जन मछलियाँ पकड़ लीं और खुशी-खुशी घर वापस चला गया।

अपने घर पहुँचने पर, उसने तुरंत अपनी पत्नी को आम और मछलियाँ दीं और उसे स्वादिष्ट भोजन बनाने को कहा। पर जब पत्नी ने आम का पहला टुकड़ा खाया तो वह तुरंत बेहोश हो गई। जैसे ही वह बेहोश हुई, पीछे से एक आवाज़ आई। आवाज़ ने किसान से कहा कि उसे लालच में आकर चोरी की है जिसकी उसे सजा मिली है। किसान ने अपनी गलती के लिए माफी माँगी और अपनी पत्नी को बचाने का अनुरोध किया। आवाज़ ने किसान को आदेश दिया कि वह प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में कभी भी लालच में आकर चोरी नहीं करेगा। उसने उसी समय प्रतिज्ञा ली। उसकी पत्नी फिर से उठ खड़ी हुई।

यह कहानी हमें कभी भी चोरी न करने और हमेशा नेक रास्ते पर चलने की सीख देती है।

लोककथा – 2 (बोधिसत्ता की बहादुरी)

एक समय की बात है, बनारस में ब्रह्मदत्त नाम का एक राजा था। बोधिसत्व का जन्म ब्रह्मदत्ता की प्रमुख रानी के पुत्र के रूप में हुआ था। नामकरण के दिन ही ब्रह्मदत्त ने 800 ब्राह्मणों की मनोकामना पूरी की। उसके बाद ब्रह्मदत्त ने ब्राह्मणों से पुत्र के भाग्य के बारे में पूछा।

ब्राह्मणों ने राजा से कहा कि उसका पुत्र उसके बाद राजा बनेगा और अपनी बुद्धि और 5 हथियारों से पूरे भारत पर शासन करेगा। जब बोधिसत्व 16 वर्ष के थे, तब उन्हें अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए कहा गया था। राजा ने बोधिसत्व को अपने गुरु के लिए गुरु दक्षिणा के रूप में एक हजार मुद्राएँ दीं और उन्हें कंधार राज्य भेज दिया, जहाँ एक बुद्धिमान शिक्षक रहता था। बोधिसत्व ने अपनी शिक्षा पूरी की, गुरु से उपहार के रूप में 5 हथियार प्राप्त किए। उन्होंने अपने गुरु से विदा ली और तक्षशिला को छोड़ दिया और अपने 5 हथियारों के साथ बनारस के लिए रवाना हो गए।

रास्ते में, उनका सामना एक शक्तिशाली राक्षस से हुआ, लेकिन बोधिसत्व में पर्याप्त आत्मविश्वास था और वे घबराए नहीं। उसके आत्मविश्वास और निडर रवैये को देखकर राक्षस ने उसे जाने दिया। वन छोड़ने से पहले, बोधिसत्व ने राक्षस को भक्ति के मार्ग पर चलने और क्रूरता के मार्ग को छोड़ने की सलाह दी। कुछ लोग अभी भी जंगल के बाहर इंतजार कर रहे थे। बोधिसत्व ने उन्हें सारी बातें बताईं और फिर बनारस की ओर चल पड़े। आगे जाकर जब बोधिसत्व राजा बना तो उसने बड़ी ईमानदारी और बुद्धि से लोगों की और देश की सेवा की।

हिंदी 7 मल्हार

लोककथा – 3 (मासूम सावित्री)

एक गाँव में सावित्री नाम की एक बच्ची अपने माता-पिता और चाचा-चाची और उसके तीन बेटों के साथ रहती थी। एक दिन, सावित्री के माता-पिता तीर्थ यात्रा पर चले गए। माता-पिता के जाने के बाद चाचा-चाची के बेटों ने सावित्री को परेशान करना शुरु कर दिया।

एक दिन सबसे बड़े भाई ने सावत्री को जानबूझकर एक छोटी सी रस्सी और छेद वाले घड़े में पानी लेने कुएँ पर भेजा और समय पर न आने पर दंड देने की धमकी भी दी। कुएँ पर पहुँचकर सावित्री रोने लगी। वहां एक साँप और मेंढक रहते थे जो सावित्री का रोना सुन कर बाहर आ गए। दोंनो ने सावित्री की मदद करने की ठानी। साँप ने रस्सी से जुड़ कर रस्सी को लम्बा बना दिया और मेंढक घड़े में इस तरह बैठ गया की घड़े का छेद बंद हो गया। सावित्री पानी निकाल कर खुशी-खुशी घर चली गई।

अगले दिन दूसरे भाई ने सावित्री को अपने सफ़ेद मैले कपड़े धोने के लिए भेजा और जानबूझकर उसे साबुन नहीं दिया। तालाब पर पहुँच कर सावित्री रोने लगी। तभी वहाँ से एक सारस निकला और रोती हुई सावित्री को देख कर उसकी मदद के लिए रुक गया। सारस कपड़ों पर लोटने लगा जिस से कपडे दूध जैसे सफ़ेद हो गए। सावित्री खुशी-खुशी कपड़े लेकर घर चली गई।

अगले दिन तीसरे भाई ने सावित्री को खूब सारे अनाज में से धान अलग करने के लिए दिए। इतने सारे धान सावित्री अकेले अलग नहीं कर सकती थी। सावित्री को दुविधा में देख कर पास में रहने वाली एक चिड़िया उसकी मदद के लिए आ गयी। उस चिड़िया ने अपने साथियों को भी बुला लिया और उन सब ने मिल कर तुरंत अनाज में से धान अलग कर दिए। सावित्री के भाई छिपकर यह सब देख रहे थे। उन्हें अपने किए पर पछतावा हुआ और उन्होंने फिर कभी सावित्री को परेशान ना करने की ठानी।

लोककथा – 4 (ब्राह्मण और नौकर)

एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। ब्राह्मण अनपढ़ था इसलिए वह कोई काम नहीं कर सकता था। एक दिन ब्रह्मण की पत्नी ने उसे राजा के पास अपनी समस्या लेकर जाने की सलाह दी। ब्राह्मण ने राजा के पास जा कर उसे आशीर्वाद दिया। राजा ने ब्राह्मण से खुश होकर एक पर्ची दी और उस पर्ची को खजाँची के पास ले जाकर अपना इनाम लेने को कहा। ब्राह्मण बहुत खुश हुआ। वह अकसर राजा के पास आने लगा।

एक दिन राजा के नौकर ने ब्राह्मण से बख्शीश मांगी। ब्राह्मण कोई जवाब दिए बिना वहाँ से चला गया। नौकर ने ब्राह्मण को सबक सिखाने की ठानी। अगले दिन नौकर ने ब्राह्मण से कहा कि राजा तुम से नाराज़ हैं क्योंकि उन्हें तुम्हारे मुँह से दुर्गंध आती है। ब्राह्मण घबरा गया और अगली बार राजा से मिलने अपने नाक मुँह पर कपड़ा रख कर गया।

शाम को नौकर ने राजा से कहा कि आज ब्राह्मण नाक मुँह पर कपड़ा इसलिए रखकर आया था क्योंकि वह कह रहा था कि उसे आप के कान से दुर्गन्ध आती है। राजा को यह सुन कर क्रोध आया। उसने ब्राह्मण को एक पर्ची देकर खजाँची के पास जाने को कहा। अगले दिन जब ब्राह्मण महल से वापस लौट रहा था तब नौकर ने फिर उस से बख्शीश माँगी। ब्राह्मण को जो पर्ची राजा से मिली थी वही उसने नौकर को दे दी। नौकर खुशी खुशी खजाँची के पास पहुंचा। खजाँची ने नौकर को बैठने को कहा। कुछ देर में एक नाई आया और नौकर के नाक-कान काटकर ले गया। नौकर गुस्से में राजा से शिकायत करने गया। राजा नौकर की बात सुनकर सारा माजरा समझ गए। उन्होंने कहा-तुम ने ब्राह्मण की झूठी शिकायत की, इसलिए तुम्हारे साथ ऐसा हुआ।

लोककथा – 5 (जादुई पेड़)

किसी जगह पर पीपल का एक बहुत बड़ा पेड़ था। वहँ रहने वाले लोगों का यह मानना था कि यह पीपल का पेड़ बहुत पवित्र है। कुछ समय बीता, वहाँ के राजा की एक बेटी हुई। बेटी का नाम रूपा रखा गया। रूपा को बाग-बगीचे में खेलना बहुत अच्छा लगता था। जैसे ही रूपा की पढ़ाई पूरी होती, वह सीधे राज बगीचे में खेलने चली जाती।

एक दिन रूपा बगीचे में खेल रही थी। तभी उसके पास एक तितली आकर बैठी। इसके पंखों में हीरे जड़े हुए थे। तभी तितली उड़ चली और रूपा उसका पीछा करते-करते जंगल में निकल गई। कुछ देर बाद रूपा को एहसास हुआ कि वह भटक गई है। तभी तेज़ तूफ़ान शुरू हो गया और रूपा रोने लगी। अचानक से रूपा के पीछे लगे पीपल के पेड़ की डाली आगे आई और उसने रूपा को उठाकर कहा कि उसके रहते रूपा को डरने की कोई जरूरत नहीं है। जब तक तूफ़ान थम नहीं गया, पीपल के पेड़ ने रूपा को अपने अंदर छिपाए रखा। तब तक रूपा को ढूँढते हुए सैनिक आ गए और उसे अपने साथ महल वापस ले गए।

धीरे-धीरे रूपा और पीपल के पेड़ की दोस्ती बढ़ने लगी। जब राजा को इसकी भनक लगी तो वह विचलित हो उठा। रूपा किसी खतरे में न पड़ जाए यह सोचकर उसने जंगल के सभी पेड़ कटवाने का निर्णय किया। राजा के आदेश से सैनिक जंगल में पेड़ काटने पहुँचे परंतु वह जैसे ही पीपल के पेड़ की टहनियाँ काटते, पेड़ से नयी टहनियाँ उग आतीं। सैनिक घबरा गए। तब पीपल के पेड़ ने गरज कर कहा कि सालों से वह और उसके साथी इंसानों को साँस लेने के लिए हवा देते आ रहे हैं, और आज यह लोग उन्हें ही खत्म करने चले हैं। अगर पेड़ नहीं रहे, तो इंसान भी नहीं बचेंगे। यह पता चलने पर राजा को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने अपना निर्णय वापस लिया और रूपा और पीपल के पेड़ की दोस्ती की फिक्र छोड़ दी।

लोककथा – 6 (लक्ष्मी की दीवाली)

यह उस समय की बात है जब देवी देवता इंसान मिलने धरती पर आते थे। एक गाँव में लक्ष्मी नाम की बच्ची अपनी माँ के साथ रहती थी। वह दोनों दूसरों के कपड़े धोकर पैसे कमाते थे। लक्ष्मी सोच रही थी कि इस बार दीवाली पर वह अपनी माँ को क्या उपहार देगी। तभी एक कौआ वहाँ उड़ता हुआ आया और अपनी चोंच से एक मोतियों का हार गिरा गया। लक्ष्मी खुश हो गई कि इस बार वह अपनी माँ को दीवाली पर हार देगी।

अगले दिन लक्ष्मी को पता चलता है कि यह हार रानी का है और वह इसके खोने से बहुत परेशान है। लक्ष्मी मायूस हो गई। पर अंत में लक्ष्मी ने उस हार को रानी को वापस लौटाने का निर्णय लिया और राजमहल की तरफ चल पड़ी। रानी अपना हार वापस पाकर बहुत खुश हुई और उसने बदले में लक्ष्मी की कोई एक इच्छा पूरी करने का वादा किया। लक्ष्मी ने रानी से कहा कि दीवाली वाली रात को पूरे गाँव में तब तक अँधेरा रखा जाए जब तक वह एक आतिशबाजी करके इशारा न दे। उसके बाद सब रोशनी कर सकते हैं।

रानी ने लक्ष्मी की बात मान कर पूरे गाँव में घोषणा करा दी। दीवाली वाली रात को पूरे गाँव में अँधेरा था सिर्फ लक्ष्मी के घर में दिए जल रहे थे। तभी शायरा के घर का दरवाजा खटका। लक्ष्मी ने दरवाज़ा खोला और उसे जैसी उम्मीद थी उसने सामने देवी लक्ष्मी को खड़ा पाया। देवी लक्ष्मी ने लक्ष्मी और उसके परिवार को हमेशा धनवान रहने का आशीर्वाद दिया और अंतर्ध्यन हो गई। इसके बाद लक्ष्मी ने आतिशबाजी करके सबको अपने-अपने घर रोशन कर लेने का इशारा कर दिया।